

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 13, महान जागृति

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 13, द ग्रेट अवेकनिंग है।

जहाँ तक हम हैं, यह चर्च में इंजील पुनरुत्थान है।

और पिछले व्याख्यान में, हमने चर्च, ईसाई धर्म, बाइबिल, ईसाइयों के प्रिय विषयों आदि की बहुत ही गंभीर आलोचना देखी। लेकिन यह अंतिम शब्द नहीं था क्योंकि अब पेंडुलम एक नई दिशा में घूम रहा है जिसे हम चर्च में इंजील पुनरुत्थान कहते हैं। अब, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, वह पुनरुत्थान फ्रांस में नहीं हुआ।

फ्रांस पूरी तरह से ईसाई धर्म से विमुख हो चुका था। लेकिन यह जर्मनी, इंग्लैंड और अमेरिका में भी हुआ। और ये तीनों तरह की घटनाएं, एक तरह से, लगभग एक साथ ही हो रही थीं, बिल्कुल नहीं, लेकिन लगभग एक साथ।

तो, पश्चिमी यूरोप, पश्चिमी यूरोप के कुछ हिस्सों और अमेरिका में महान जागृति थी। तो सबसे पहले, हमने जर्मनी और जर्मनी में पुनरुत्थान के बारे में बात की, और यह एक आंदोलन है जिसे पीटिज्म और स्पिनर फ्रैंक और काउंट निकोलस लुडविग वॉन ज़िनज़ेंडोर्फ कहा जाता है। तो, हमने इसके बारे में बात की।

तो, पीटिज्म। अब हम अमेरिका में हैं, और हम अमेरिका में महान जागृति में हैं। जैसा कि हमने बताया, उनमें से दो या तीन थे।

सन् 1734 आया, सन् 1800 आया, और फिर सदी के मध्य में सन् 1850 आया।

क्या कोई और जागृति हुई थी? क्या कोई तीसरी महान जागृति हुई थी? या यह दूसरी महान जागृति का ही सिलसिला था? हम विद्वानों को इस बारे में बात करने और इस पर चिंता करने देंगे। हालाँकि, हमारे पाठ्यक्रम के लिए, हम केवल पहली महान जागृति से ही संबंधित हैं। इसलिए हम 18वीं शताब्दी के मध्य में जो कुछ हो रहा है, उस पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

ठीक है, और बस एक याद दिला दूँ, हमने थियोडोरस जे. फ्रेलिंगहुइसन के बारे में बात की थी। अगर आप में से कोई न्यू जर्सी से है, तो आप इस नाम को जानते होंगे, फ्रेलिंगहुइसन। उन्होंने डच रिफॉर्म चर्च में पुनरुत्थान लाया।

हमने गिल्बर्ट टेनेंट के बारे में बात की और बताया कि वह कितने महत्वपूर्ण थे, खासकर जब उन्होंने फ्रेलिंगहुइसन से सीखा था। हालाँकि, टेनेंट प्रेस्बिटेरियन थे, जिन्होंने न्यू जर्सी और मध्य

उपनिवेशों में प्रेस्बिटेरियनवाद के पुनरुत्थान और इंजील जागरण को जन्म दिया। हमने जॉर्ज व्हाइटफील्ड के साथ समाप्त किया और बताया कि जॉर्ज व्हाइटफील्ड कितने महत्वपूर्ण हैं।

क्योंकि, सबसे पहले, वह ब्रिटिश थे, सात बार यहाँ आए, यहाँ मरे, जैसा कि हमने बताया, लेकिन उन्होंने संप्रदाय की सीमाओं को भी पार किया। वह सच्चे अर्थों में पुनरुत्थानवादी थे, न केवल चर्चों के, बल्कि चर्चों से बाहर के लोगों के पुनरुत्थानवादी, पापियों, पश्चात्ताप करने वालों, आने वालों, मसीह में विश्वास करने वालों, चर्चों में शामिल होने आदि के भी। और एक बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व, सड़कों पर उपदेश देना और गाँव के चौराहों पर उपदेश देना आदि।

तो वह वही व्यक्ति था, जिसने जॉन वेस्ले को राजी किया, हम बाद में वेस्ले के बारे में बात करेंगे, लेकिन वह वही व्यक्ति था जिसने जॉन वेस्ले को खुले आसमान के नीचे प्रचार करने के लिए राजी किया, न कि सिर्फ चर्च की इमारतों तक अपने प्रचार को सीमित रखने के लिए, बल्कि खुले आसमान के नीचे जाकर प्रचार करने के लिए। और व्हाइटफील्ड ने, बेशक, ऐसा ही किया। इसलिए, हमने उसे इस तरह का महान यात्री कहा है, और वह निश्चित रूप से ऐसा ही था।

तो ये हैं पहले महान जागरण के पहले तीन महत्वपूर्ण नेता: फ्रेलिंगहुइसन, टेनेंट और व्हाइटफील्ड। इन तीन लोगों और उनके द्वारा अमेरिकी तटों पर पुनरुत्थानवाद लाने और इस पुनरुत्थान को लाने के तरीके के बारे में कोई सवाल? यह एक तरह से देववाद का जवाब है क्योंकि देववाद ने जोर पकड़ना शुरू कर दिया था और इसी तरह। और यह, यह देववाद का जवाब है।

ठीक है। ठीक है। चलिए अब उस व्यक्ति की बात करते हैं जिसके साथ आप पहली महान जागृति को सबसे स्पष्ट रूप से जोड़ेंगे, और वह है जोनाथन एडवर्ड्स।

ठीक है। जोनाथन एडवर्ड्स बहुत उल्लेखनीय हैं। वास्तव में, हमने पहली महान जागृति की जो तारीख दी है, 1734, वह जोनाथन एडवर्ड्स के चर्च में हुई जागृति से ली गई है।

जोनाथन एडवर्ड्स नॉर्थम्प्टन, मैसाचुसेट्स में एक चर्च में थे, जो कि मध्य-राज्य की तरह है, मुझे लगता है। वह नॉर्थम्प्टन, मैसाचुसेट्स में एक मण्डली चर्च में थे। जोनाथन एडवर्ड्स ने अपने उपदेश और बाइबिल के उपदेश के कारण एक महान पुनरुद्धार का अनुभव किया जो उनके चर्च और पड़ोसी चर्चों में फैल गया।

और इसलिए 1734, जो कि प्रथम महान जागृति के लिए दी गई तिथि है, वह इसलिए है क्योंकि उनके चर्च में क्या हुआ था, लेकिन इसलिए भी क्योंकि जोनाथन एडवर्ड्स प्रथम महान जागृति में एक महत्वपूर्ण नेता बन गए और उन्हें प्रथम महान जागृति के महान प्रचारकों, लेखकों और अन्य लोगों में से एक के रूप में पहचाना गया। जोनाथन एडवर्ड्स ने जो किया, साथ ही इन अन्य लोगों ने जो किया, वह जोनाथन एडवर्ड्स में सबसे अधिक स्पष्ट था, और हम इसे बाद में भी देखेंगे, लेकिन हम इसका उल्लेख यहाँ करेंगे। जोनाथन एडवर्ड्स ने कैल्विनवाद को अमेरिकी चेतना में वापस लाया।

याद रखें, कैल्विनवाद तीर्थयात्रियों के साथ यहाँ आया, खास तौर पर मैसाचुसेट्स बे कॉलोनी में प्यूरिटन के साथ। ये लोग कैल्विनवादी थे, याद है? और इसलिए प्यूरिटन कैल्विनवादी थे। और फिर आपके पास अन्य समूह थे जो कैल्विनवादी थे, जैसे रोड आइलैंड में कुछ बैपटिस्ट।

लेकिन 1734 तक, कैल्विनवाद अमेरिकी सार्वजनिक जीवन और धार्मिक जीवन से लगभग समाप्त हो चुका था। और जोनाथन एडवर्ड्स एक अच्छे कैल्विनवादी थे। इसलिए, अपने उपदेश और अपनी शिक्षाओं में, उन्होंने कैल्विनवाद को अमेरिका के धार्मिक जीवन के रूप में मुख्यधारा में वापस लाया।

इसलिए, उनके पुनरुत्थान उनके उपदेश के संदर्भ में बहुत कैल्विनवादी थे। आप नहीं चुन सकते थे, भगवान नहीं चुन सकते थे, आप नहीं, बल्कि भगवान, भगवान व्हाइटफील्ड से अलग किसी व्यक्ति को उनके उपदेश शैली में नहीं चुन सकते थे। व्हाइटफील्ड महान थे, बहुत उग्र, बहुत उत्साही; बहुत, हमने आपको व्हाइटफील्ड के उपदेश की तस्वीरें दिखाईं।

व्हाइटफील्ड बहुत ही करिश्माई और मिलनसार व्यक्ति थे। जोनाथन एडवर्ड्स बिल्कुल इसके विपरीत थे। जोनाथन एडवर्ड्स एक बहुत ही शांत उपदेशक थे।

जोनाथन एडवर्ड्स ने कहा कि जब वह उपदेश देते थे, तो उनकी नज़र चर्च के पीछे लगी घंटी की रस्सी पर रहती थी। और जब वह शास्त्रों से उपदेश देते थे, तो वह इसी पर ध्यान देते थे। इसे शायद सूखा उपदेश माना जाए, लेकिन यह बिल्कुल बाइबल आधारित उपदेश है।

और लोगों को उस बाइबिल के उपदेश से दोषी ठहराया गया। तो, यहाँ परमेश्वर है, आप जानते हैं, दो अलग-अलग प्रकार के व्यक्तियों को चुनता है। और मुझे याद है कि जब मैं सेमिनरी में था, तो हमें उपदेश के लिए जो परिभाषा दी गई थी वह यह थी कि उपदेश ईश्वर का सत्य है जो व्यक्तित्व के माध्यम से आता है।

और इसलिए यह निश्चित रूप से व्हाइटफील्ड और जोनाथन एडवर्ड्स के लिए सच था, दो अलग-अलग तरह के व्यक्ति, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। और, बेशक, आप जानते हैं कि जोनाथन एडवर्ड्स कैसे दिखते हैं, लेकिन जोनाथन एडवर्ड्स और उनके उपदेश की एक तस्वीर है।

जोनाथन एडवर्ड्स के बारे में हम बस इतना ही कहेंगे। उन्होंने एक शानदार जीवन जिया। मैं अपने छात्रों को बताना पसंद करता हूँ कि वे दिन में लगभग 16 घंटे पढ़ाई करते थे, हालाँकि उनकी पत्नी और बड़ा परिवार था, लेकिन वे दिन में लगभग 16 घंटे पढ़ाई करते थे।

यह बहुत बढ़िया है, यह बढ़िया है। क्या यह एक बढ़िया उदाहरण नहीं है? तो, प्रतिदिन 16 घंटे अध्ययन और बढ़िया उपदेश देने से ही पुनरुत्थान हुआ क्योंकि बाइबल ने एक तरह से खुद के लिए बोला था। इसलिए, मुझे लगता है कि अपने जीवन में इतना अध्ययन करना एक अच्छी बात है, और अगर आप अपने अध्ययन के प्रति वफादार हैं तो आप अपने अध्ययन के ज़रिए जीवन में बहुत कुछ हासिल करेंगे।

तो, हम जोनाथन को आज का वह पुराना संदेश देने देंगे। तो, ठीक है। तो, जोनाथन, क्या आपके पास उसके बारे में कोई सवाल है, इससे पहले कि हम उसे छोड़ दें? हम पहले महान जागरण के प्रति प्रतिक्रियाओं और फिर पहले महान जागरण के परिणामों पर आने वाले हैं।

लेकिन जोनाथन के बारे में कोई सवाल? मेरा मतलब है, हम उनकी जीवनी या इनमें से किसी भी व्यक्ति की जीवनी पर ज़्यादा समय नहीं बिता रहे हैं। हम जॉन वेस्ले की जीवनी पर थोड़ा ज़्यादा समय बिताने जा रहे हैं। ठीक है।

आइए अमेरिका में पहली महान जागृति के प्रति प्रतिक्रिया पर नज़र डालें। मूल रूप से तीन प्रतिक्रियाएँ थीं और हम उन तीनों का उल्लेख करना चाहते हैं। तो, सबसे पहले, कुछ संप्रदाय पहली महान जागृति को लेकर विभाजित थे।

तो, मैं पेज 13 पर हूँ, और ठीक नीचे, C3 है, पहली महान जागृति पर प्रतिक्रिया। कुछ संप्रदाय पहली महान जागृति को लेकर बहुत विभाजित थे। और इसका एक उदाहरण प्रेस्बिटेरियन थे।

अब, जब हम 18वीं सदी के मध्य में प्रेस्बिटेरियन कहते हैं, तो यह आज के प्रेस्बिटेरियन संप्रदायों की तरह स्पष्ट नहीं होता है क्योंकि प्रेस्बिटेरियन और कांग्रेसनलिस्ट, बहुत करीब से, कई बार प्रेस्बिटेरियन और कांग्रेसनलिस्ट में अंतर करना मुश्किल था। हमने चार्ल्स ग्रैडिसन फिन्नी का उल्लेख किया। उन्हें पहले प्रेस्बिटेरियन मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था, फिर वे कांग्रेसनलिस्ट मंत्री बन गए, लेकिन उन दिनों ऐसा करना मुश्किल नहीं था।

लेकिन मूल रूप से, प्रेस्बिटेरियन के बीच, संप्रदाय के भीतर एक विभाजन था। अब, इसने अलग-अलग संप्रदायों के गठन का कारण नहीं बनाया, लेकिन निश्चित रूप से दो अलग-अलग राय थीं। प्रेस्बिटेरियन की पुरानी पार्टी कहलाने वाली एक पार्टी थी।

और प्रेसबिटेरियन की पुरानी पार्टी को पुनरुत्थानवाद पसंद नहीं था। यह पुनरुत्थानवाद बहुत भावनात्मक था, बहुत करिश्माई था। वे इसे बाइबिल के अनुसार नहीं मानते थे, इत्यादि।

तो, प्रेस्बिटेरियन के बीच पुरानी पार्टी वास्तव में चल रहे पुनरुत्थान के खिलाफ़ बोलती थी। और, ज़ाहिर है, वे धर्मनिष्ठता के बारे में जानते होंगे। वे इंग्लैंड में वेस्टलिंग पुनरुद्धार और इसी तरह की अन्य बातों के बारे में जानते होंगे।

और उन्हें यह पसंद नहीं आया। वे इसके बहुत खिलाफ़ थे। दूसरी ओर, नई साइड पार्टी, नई साइड पार्टी पुनरुत्थान और जागृति के पक्ष में थी।

उन्होंने सोचा कि यहाँ जो कुछ हो रहा था वह ईश्वर की ओर से था, और यह न्यू टेस्टामेंट चर्च की तरह था। इसलिए, एक चर्च में, आप पुराने पक्ष के लोगों और नए पक्ष के लोगों को एक चर्च में रख सकते थे। उन्होंने अलग-अलग संप्रदाय नहीं बनाए, लेकिन इस पुनरुद्धार के साथ क्या हो रहा था और अन्य स्थानों पर पुनरुद्धार के बारे में उन्होंने जो सुना, उसके बारे में उनकी राय निश्चित रूप से अलग थी।

तो यह पहली तरह की प्रतिक्रिया थी। एक तरह से रैंकों में विभाजन था। दूसरी प्रतिक्रिया कुछ बहुत महत्वपूर्ण लोगों की ओर से आई।

इनमें से एक सबसे महत्वपूर्ण नाम चार्ल्स चाउंसी का था। अब, एक और नाम है जिसे मैं उच्चारण करना पसंद करता हूँ क्योंकि यह एक अच्छा नाम है। चार्ल्स चाउंसी।

यह बहुत ही उच्च श्रेणी का लगता है, है न? चार्ल्स चाउंसी। वैसे, वास्तव में, चार्ल्स चाउंसी एक बहुत ही उच्च श्रेणी के व्यक्ति थे। चार्ल्स चाउंसी बोस्टन में पहले मण्डली चर्च के पादरी थे।

इसलिए, बोस्टन में पहले मण्डली चर्च से ज़्यादा प्रतिष्ठित पादरी और ज़्यादा प्रतिष्ठित चर्च और ज़्यादा प्रभावशाली चर्च नहीं हो सकता था। वह पादरी था। उसे चल रही जागृति नापसंद थी, और उसने इसके खिलाफ़ आवाज़ उठाई।

और इसलिए, क्योंकि वह प्रभावशाली, शक्तिशाली, प्रभावशाली व्यक्ति थे, उनके पास एक शक्तिशाली चर्च था, इसलिए कुछ लोगों को पुनरुत्थान के खिलाफ़ मोड़ने में उनका बहुत बड़ा प्रभाव होगा। लेकिन इस समय वह बहुत प्रभावशाली हैं। चार्ल्स चाउंसी का जीवन दिलचस्प है।

वह इस प्रथम महान जागृति के दौरान एक मण्डली प्रचारक थे। और आपको यह दिखाने के लिए कि वह कितने उदारवादी थे, वह मरने से पहले अंततः यूनिटेरियन बन गए। इसलिए वह एक तरह से देववाद यूनिटेरियनवाद में चले गए।

और इसीलिए उन्होंने पुनरुत्थान के खिलाफ़ बात की। इसलिए, वे यह सब भावुकता नहीं चाहते थे। वे संयम चाहते थे।

वह चाहते थे कि हर चीज़ को तर्क से परखा जाए। वह एक प्रबुद्ध व्यक्ति की तरह लगते हैं, है न? खैर, वह थे। इसलिए, धार्मिक जीवन में संयम, तर्क और तर्कसंगतता ही वह चीज़ है जो हम चाहते हैं।

और पुनरुद्धार कुछ बिल्कुल अलग कर रहा है। तो, चार्ल्स चाउंसी, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया थी। तीसरी प्रतिक्रिया कुछ विश्वविद्यालयों से विरोध थी।

कुछ विश्वविद्यालय अध्यक्ष, शिक्षक और छात्र पुनरुद्धार के विरोध में थे। इसलिए मैं यहाँ उदाहरण के तौर पर दो का उल्लेख करने जा रहा हूँ। सबसे पहले, येल विश्वविद्यालय।

अब, येल की स्थापना एक प्यूरिटन ने की थी। हार्वर्ड की तरह, येल की स्थापना भी एक प्यूरिटन ने की थी। और इसलिए, यह विडंबना है कि अब, 18वीं सदी के मध्य में, येल बहुत दयालु है, लगभग धर्म-विरोधी है।

तो, प्रोफेसरों, छात्रों और येल के लोगों को यहाँ जो हो रहा है वह पसंद नहीं है। ठीक है, अब येल के बारे में संक्षेप में बात करें, तो यह विडंबनापूर्ण है। यह केवल विडंबनापूर्ण नहीं है क्योंकि येल

की शुरुआत प्यूरिटन्स ने बाइबल पढ़ाने और प्रचारकों को मण्डली में प्रचार करने का तरीका सिखाने के लिए की थी।

लेकिन यह विडंबना है क्योंकि 1800 में, हम 1734 में हैं, हम 18वीं सदी के मध्य में हैं। 1800 में, येल में दूसरी महान जागृति शुरू हुई। तो यहाँ 18वीं सदी के मध्य में, आपको यह पुनरुत्थान-विरोधी चीज़ मिलती है।

लेकिन 50 साल बाद, आपको वहाँ से दूसरी महान जागृति की शुरुआत देखने को मिलती है, जो मुझे लगता है कि वाकई विडंबनापूर्ण है और इस जागृति के प्रति येल के विरोध का वाकई एक अद्भुत निष्कर्ष है। दूसरा विरोध हार्वर्ड था। विरोध का दूसरा उदाहरण हार्वर्ड था।

अब, हार्वर्ड की एक दिलचस्प कहानी है क्योंकि इसकी स्थापना 1636 में एक अच्छे प्यूरिटन जॉन हार्वर्ड ने की थी। उन्होंने इस विश्वविद्यालय को शुरू करने के लिए अपनी 400 पुस्तकों की लाइब्रेरी दे दी। और हार्वर्ड की स्थापना, ज़ाहिर है, मूल रूप से प्रचारकों को प्रशिक्षित करने के लिए की गई थी।

और अब, 150 साल बाद, या 120 साल बाद, जो भी हो, हार्वर्ड काफी हद तक यूनिटेरियन है। यह ईश्वरवादी है, यह यूनिटेरियन है। इसने अपने पहले प्यार को बरकरार नहीं रखा, और यह पहली महान जागृति के लिए काफी आलोचनात्मक हो गया।

अब, यहाँ इसका एक उदाहरण है, और मुझे ठीक से पता नहीं है कि यह कब हुआ। मुझे इस पर थोड़ा और शोध करने की ज़रूरत है। लेकिन मैं हमेशा इस बात से रोमांचित रहता हूँ कि हार्वर्ड का आदर्श वाक्य क्या है? हार्वर्ड का आदर्श वाक्य क्या है? आप इसे हर जगह देखते हैं।

आप इसे टी-शर्ट पर देख सकते हैं। हार्वर्ड का आदर्श वाक्य क्या है? एक बहुत ही दिलचस्प आदर्श वाक्य। वेरिटास।

वेरिटास। जब आप हार्वर्ड के प्रतीक चिन्ह देखते हैं, तो आपको वेरिटास दिखता है, जिसका अर्थ है सत्य। यह हार्वर्ड विश्वविद्यालय का आदर्श वाक्य है।

लेकिन यह दिलचस्प है कि जॉन हार्वर्ड द्वारा 1636 में स्थापित मूल आदर्श वाक्य था वेरिटास इन क्रिस्टो एट एक्लेसिया। मसीह और चर्च में सत्य। इसलिए, यह दिलचस्प है कि लगभग 100 साल बाद, उन्होंने मसीह और चर्च में सत्य को छोड़ दिया।

मुझे ठीक-ठीक तारीख नहीं पता कि उन्होंने ऐसा कब किया, इसलिए मुझे इसकी जांच करनी होगी। लेकिन यह दिलचस्प है कि हार्वर्ड ने आदर्श वाक्य का दूसरा हिस्सा हटा दिया, मसीह और चर्च में। इसे जाने दें।

अब, यह सच है। तो यह दिलचस्प है। लेकिन वैसे भी, हार्वर्ड, प्रोफेसर, संकाय और छात्रों ने पुनरुद्धार के खिलाफ आवाज उठाई।

बहुत ज़्यादा भावुकता। हर चीज़ को तर्क से मापा जाना चाहिए। और जो कुछ हो रहा है वह अनुचित है।

तो, निश्चित रूप से महान जागृति के प्रति तीन प्रतिक्रियाएँ थीं और तीन तरीके थे जिनसे महान जागृति को कुछ हद तक नुकसान पहुँच सकता था। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसलिए हम महान जागृति, प्रथम महान जागृति, धार्मिक और सामाजिक के स्थायी परिणामों के बारे में बात करेंगे।

लेकिन ऐसा करने से पहले, क्या प्रथम महान जागृति के प्रति उन प्रतिक्रियाओं के बारे में कोई प्रश्न हैं? उसके बारे में कुछ? क्या हमें यहाँ आगे बढ़ना चाहिए? ठीक है, आपका दिल आशीर्वादित हो, हम यहाँ आगे बढ़ते हैं। प्रथम महान जागृति के परिणाम। मैंने उन्हें दो भागों में विभाजित किया है: धार्मिक और सामाजिक।

लेकिन यह कहने के बाद, एक कहाँ समाप्त होता है और दूसरा कहाँ शुरू होता है? मैं यह नहीं कह सकता कि मुझे यह पता है। मैं बस इन दो खंडों को देखने जा रहा हूँ, और आप देखेंगे कि कभी-कभी उनके बीच ओवरलैप होता है। तो, आइए पहले धर्मशास्त्र के बारे में बात करते हैं।

प्रथम महान जागृति के धार्मिक परिणाम। ठीक है, नंबर एक, पहली बात वह है जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं। प्रथम महान जागृति में निश्चित रूप से कैल्विनवाद का पुनरुत्थान हुआ था।

प्यूरिटन द्वारा यहां लाए जाने के बाद यह खत्म हो गया और फिर कैल्विनवादी धर्मशास्त्र का पुनरुत्थान हुआ। हमने जिन चार लोगों का उल्लेख किया है, वे सभी फ्रेलिंगहुइसन और टेनेट और व्हाइटफील्ड और जॉन एफ. एडवर्ड्स, सभी कैल्विनवादी थे। इसलिए कैल्विनवाद का वास्तविक पुनरुत्थान हुआ है और यह फिर से केंद्र में आ गया है।

अब, यह लंबे समय तक नहीं चलने वाला है क्योंकि पेंडुलम फिर से झूलने वाला है, लेकिन अभी, धार्मिक दृष्टि से, यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। इन सभी लोगों के मुख्य संदेशों में से एक चुनाव का संदेश था। परमेश्वर उद्धार पाने के लिए कुछ पापियों को चुनता है।

भगवान ने कुछ पापियों को बचाने के लिए पहले से ही नियत कर दिया था। तो, आप इसे देख सकते हैं, और इसलिए आपको कैल्विनवाद का यह पूरा पुनरुत्थान मिला है। दूसरी चीज़ जो आपको मिलती है, वह है जिसे मैं अनुभवात्मक धर्मनिष्ठता का पुनरुत्थान कहता हूँ।

और अनुभवात्मक धर्मनिष्ठा से मेरा मतलब है कि ईश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसी से प्रेम करने को उच्च प्राथमिकता देना। सिर्फ़ ईश्वर और ईश्वर के बारे में सभी सिद्धांतों को जानना ही नहीं। ऐसा करना ठीक है, लेकिन अनुभवात्मक धर्मनिष्ठा एक सच्चा प्रेम है, ईश्वर के प्रति एक सच्ची प्रतिबद्धता है, और अपने पड़ोसी के प्रति भी एक सच्चा प्रेम और प्रतिबद्धता है।

यह मैथ्यू 22 की तरह है: अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल और दिमाग से प्यार करो, इसलिए अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्यार करो। तो, उस अनुभवात्मक धर्मनिष्ठा का नवीनीकरण, पुनरुद्धार हुआ। अब, यह वह अनुभवात्मक धर्मनिष्ठा थी जिसके खिलाफ चार्ल्स चाउंसी जैसे

लोगों ने प्रचार किया था, लेकिन फिर भी, इसने पकड़ बनाई और कई लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी।

तीसरा, इसका तीसरा परिणाम धार्मिक जीवन के लिए एक बड़ी परीक्षा थी, जो व्यक्तिगत रूपांतरण थी। क्या आपके जीवन में ऐसा समय था या क्या आपके जीवन में ऐसा समय है जब आपने मसीह को हाँ कहा था? यह जोर व्यक्तिगत रूपांतरण पर है। इसलिए यह यहाँ एक वास्तविक तरह की बड़ी परीक्षा बन जाती है।

तो, यह कोई धार्मिक पंथ नहीं है। क्या आप पंथ का पाठ कर सकते हैं? यह मायने नहीं रखता कि आप किस चर्च से जुड़े हैं। यह मायने नहीं रखता कि आप कितनी बार चर्च जाते हैं।

यह एक अच्छा नैतिक जीवन जीना नहीं है। ये सभी चीजें महत्वपूर्ण हैं, लेकिन अब मुख्य परीक्षा व्यक्तिगत रूपांतरण की है। और इसलिए जागृति ने वास्तव में व्यक्तिगत रूपांतरण पर जोर दिया।

और चौथा, ध्यान दें कि मैंने इसे धर्मशास्त्र के अंतर्गत रखा है, लेकिन आप इसे सामाजिक के अंतर्गत भी रख सकते हैं। हालाँकि, पहली महान जागृति ने उच्च शिक्षा के लिए चिंता को प्रेरित किया। अब, उच्च शिक्षा के ये उदाहरण मुख्य रूप से मंत्रालय के लिए तैयारी हैं।

इसीलिए उनकी स्थापना की गई थी। लेकिन प्रिंसटन, हमने पहले प्रिंसटन की स्थापना का उल्लेख किया था, गिल्बर्ट टेनेंट, लॉग कॉलेज, प्रिंसटन। लेकिन प्रिंसटन की स्थापना प्रेस्बिटेरियन पादरियों को प्रशिक्षित करने के लिए की गई थी।

तो वह रोड आइलैंड कॉलेज, अब शायद आप जानते हैं, आज एक रोड आइलैंड कॉलेज है, लेकिन यह वही नहीं है क्योंकि बैपटिस्ट द्वारा स्थापित किया गया था जिसे पहले रोड आइलैंड कॉलेज कहा जाता था, मुझे लगता है कि इसकी स्थापना वॉरेन, रोड आइलैंड में हुई थी, जैसा कि मुझे याद है, लेकिन वह ब्राउन यूनिवर्सिटी बन गई, 1764। क्रीस कॉलेज दिलचस्प है; मूल शीर्षक अब रटगर्स यूनिवर्सिटी है। मुझे रटगर्स में दिलचस्पी है क्योंकि मेरी कुछ भतीजी हैं जो रटगर्स से पढ़ी हैं और कुछ भतीजे हैं।

मेरा एक भतीजा या एक परपोता अभी रटगर्स में है। लेकिन इसकी स्थापना डच रिफॉर्म चर्च द्वारा डच रिफॉर्म पादरियों को पढ़ाने के लिए की गई थी। और फिर डार्टमाउथ कॉलेज, मैं इसे 1769 दे रहा हूँ।

मूल अमेरिकियों और भारतीयों के लिए एक मिशनरी स्कूल था, और इससे पहले, यह डार्टमाउथ में विकसित हुआ। लेकिन आम तौर पर मुझे लगता है कि डार्टमाउथ इसे एक मण्डली संस्था के रूप में अपनी संस्था की स्थापना के रूप में देता है, प्रशिक्षित मण्डली प्रचारक। तो, सवाल यह है कि, यहाँ हमारे पास क्या है, क्या यह धार्मिक है या सामाजिक है? खैर, यह स्पष्ट रूप से दोनों है यदि आप संस्थापक हैं, यदि आप इस तरह की सामाजिक संस्थाओं की शुरुआत कर रहे हैं।

लेकिन यह धार्मिक भी है क्योंकि यह सभी विभिन्न ईसाई संप्रदायों में प्रचारकों को प्रशिक्षित करने के लिए स्थापित किया गया है ताकि सुसमाचार का संदेश लोगों तक पहुँचाया जा सके। अब, मैं कहूँगा कि, आज इन स्थानों को जानने के बाद, मुझे लगता है कि इन परिसरों में बहुत से लोग शायद इसे महसूस नहीं करते हैं या शायद इसे भूल गए हैं। प्रेस्बिटेरियन, निश्चित रूप से बैपटिस्ट, डच रिफॉर्मिड कॉन्ग्रेगेशनलिस्ट।

मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूँ: क्या आप में से कोई प्रिंसटन गया है? क्या आप में से किसी ने प्रिंसटन देखा है? प्रोविडेंस में ब्राउन के बारे में क्या? हमें एक फील्ड ट्रिप पर जाना चाहिए। रटगर्स के बारे में क्या? नहीं, रटगर्स के लोग नहीं। डार्टमाउथ के बारे में क्या? हमसे ज़्यादा दूर नहीं है।

ठीक है, डार्टमाउथ के लिए एक। ठीक है। खैर, ये बहुत सुंदर संस्थान हैं, बहुत दिलचस्प जगहें हैं।

लेकिन याद रखें कि इनकी स्थापना किस कारण से की गई थी, और यह धार्मिक योगदान के मामले में बहुत महत्वपूर्ण है। ठीक है, क्या पहली जागृति के इन धार्मिक परिणामों के बारे में कोई सवाल है? बहुत, बहुत महत्वपूर्ण, इसमें कोई संदेह नहीं है। ठीक है, चलिए सामाजिक मुद्दों पर आते हैं।

और हमने कहा कि सामाजिक और धार्मिक कभी-कभी एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि समाज के लिए पहली महान जागृति का सामाजिक योगदान जबरदस्त था। और हम देखेंगे कि वे कितने महान थे।

मेरे पास एक अंतिम उद्धरण है जो मैं यहाँ दे रहा हूँ, तो देखिए कि वे कितने उल्लेखनीय थे। ठीक है, नंबर एक, निश्चित रूप से पहली महान जागृति के साथ आम व्यक्ति का उत्थान होता है। ठीक है, और आम व्यक्ति का उत्थान होता है क्योंकि आपके जीवन में सबसे ज़रूरी चीज़ धार्मिक अनुभव है, मसीह के साथ एक अनुभव।

यह सबके लिए उपलब्ध है। इसलिए, भगवान कैसे काम करते हैं, इस मामले में कोई पदानुक्रम नहीं है। भगवान सबके साथ काम करते हैं।

और इसलिए, सड़क पर चलने वाला आदमी, जैसा कि यह था, मुझे संदेह नहीं है कि उन्होंने उन दिनों इस शब्द का इस्तेमाल किया था, लेकिन सड़क पर चलने वाला आदमी या सड़क पर चलने वाली महिला, वे लोग जानते थे कि वे प्रशिक्षित पादरी और राजनीतिक कार्यालय में बैठे लोगों की तरह ही महत्वपूर्ण थे। इसलिए निश्चित रूप से आम आदमी का उत्थान हुआ है। अब, सामाजिक रूप से, यह अमेरिकी धरती पर बहुत महत्वपूर्ण होने जा रहा है।

अमेरिकी सार्वजनिक जीवन के लोकतंत्रीकरण के साथ, आम आदमी के पास असली ताकत होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण होने जा रहा है। नंबर दो, पहले महान जागरण के साथ, आम लोगों की गतिविधियों पर जोर दिया गया है, न कि केवल नियुक्त प्रचारकों पर, न कि केवल नियुक्त मंत्रियों पर।

मैं वापस जाकर फिर से ऐसा करने जा रहा हूँ। मैंने ऐसा क्यों किया? मुझे यह बहुत पसंद है। मुझे आश्चर्य है कि मैंने ऐसा क्यों किया।

क्या यह बढ़िया नहीं है? मैंने ऐसा क्यों किया? मुझे नहीं पता, लेकिन मुझे यहाँ जो दिख रहा है वह मुझे पसंद है। तो वैसे भी, अपना ध्यान बनाए रखें। यही सबसे महत्वपूर्ण बात है।

ठीक है, तो आम लोगों की गतिविधियों पर जोर दिया जाता है, जिसका मतलब क्या है? इसका मतलब है नेतृत्व की नई भूमिकाएँ। तो इस समय तक, समुदाय में नेता कौन था? समुदाय में नेता मूल रूप से मंत्री या पुजारी होता था। उस समय अमेरिका में बहुत से रोमन कैथोलिक नहीं थे, लेकिन मंत्री समुदाय में नेता होता था।

अब, आम लोग नेतृत्व की भूमिकाएँ ले सकते हैं, लेकिन वे न केवल चर्च में बल्कि व्यापक समाज में चर्च के बाहर भी नेतृत्व की भूमिकाएँ ले सकते हैं। इसका अमेरिकी सार्वजनिक जीवन पर प्रभाव पड़ने वाला है, लेकिन यह सब चर्च में शुरू हुआ। महान जागृति के साथ यही महत्वपूर्ण बात है।

नंबर तीन धार्मिक जीवन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता है। तो, आप जानते हैं, यह यीशु और मैं हैं। मैं मसीह के पास आया।

मैंने यह निर्णय मसीह के लिए लिया। खैर, धार्मिक जीवन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता ने राजनीतिक जीवन में स्वतंत्रता की ओर इशारा किया। इसलिए, जैसे मैंने अपने धार्मिक जीवन में एक व्यक्तिगत निर्णय लिया, अब मुझे अपने राजनीतिक जीवन या व्यापक समाज में अपने सामाजिक जीवन में एक व्यक्तिगत निर्णय लेने के लिए बुलाया जाएगा।

तो यह बहुत महत्वपूर्ण होने जा रहा है। आप जानते हैं, मेरा मतलब है, जाहिर है, हम यहाँ अमेरिकी क्रांति की ओर बढ़ रहे हैं। तो यह नंबर तीन है।

चौथा नंबर इस महान जागृति के साथ चर्च और राज्य का पृथक्करण है। अब, याद रखें, हमने पहले चर्च और राज्य के पृथक्करण के बारे में बात की है, और चर्च और राज्य के पृथक्करण का कारण यह है कि राज्य चर्च पर किसी तरह का अतिक्रमण या उस पर हावी न हो। यह विडंबना है कि आज चर्च और राज्य के पृथक्करण की चर्चाएँ इसके ठीक विपरीत हैं।

लोगों को डर है कि धर्म सार्वजनिक जीवन को प्रभावित करेगा। खैर, यही कारण नहीं है कि लोगों ने चर्च और राज्य को अलग रखा है। उनके पास चर्च और राज्य का अलगाव इसलिए है क्योंकि वे संप्रदायों के रूप में, ईसाई चर्चों के रूप में, किसी भी तरह के राज्य नियंत्रण से मुक्त और स्वतंत्र महसूस करना चाहते हैं।

तो, निश्चित रूप से चर्च और राज्य के बीच एक अलगाव है। तो यह एक और तरह की सामाजिक बात है। नंबर पांच एक नया मानवीय आवेग है क्योंकि सुसमाचार क्या है, जैसा कि ये सभी लोग प्रचार कर रहे हैं, वे क्या कह रहे हैं? ईश्वर से प्रेम करो, अपने पड़ोसी से प्रेम करो।

एक नया मानवीय आवेग, गरीबों की देखभाल, विधवाओं की देखभाल, अनाथों की देखभाल। यह किसका काम है? यह करना चर्च का काम है। यहीं पर आप सबसे पहले उपदेशक को उपदेश देते हुए सुनकर और फिर बहुत ही व्यावहारिक तरीकों से ऐसा करना सीखते हैं।

जॉर्ज व्हिटफील्ड एक अच्छे उदाहरण थे, जिन्होंने जॉर्जिया में एक अनाथालय को खोजने में मदद की, जिसकी ज़रूरत थी, और उन्होंने इसे खोजने में मदद की। यह सुसमाचार का हिस्सा है: ईश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना। अब, जो होता है वह यह है कि यह मानवीय आवेग अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में आता है।

अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में एक मानवीय आवेग है जो उन लोगों में भी आता है जो विशेष रूप से धार्मिक नहीं हैं, लेकिन फिर भी वह मानवीय आवेग है। यदि आप तेजी से आगे बढ़ते हैं, तो हम आज इसे देखते हैं। अमेरिकी जनता, अमेरिकी लोग मानवतावादी धर्मार्थ कार्य के मामले में दुनिया के सबसे उदार लोग हैं।

क्या आपने संयोग से इस कहानी के बारे में पढ़ा है? इसका किसी से कोई लेना-देना नहीं है। क्या आपने बेघर आदमी के बारे में कहानी पढ़ी है जिसे बोस्टन की सड़कों पर कुछ पैसे मिले थे? यह काफी बड़ी रकम थी और ट्रैवलर चेक की तरह थी। उसने परिवार को ढूंढा और उसे वापस कर दिया, वास्तव में एक ईसाई कार्य के रूप में, मुझे लगता है कि यह उसके अपने जीवन में हुआ था।

वह बेघर था। उसके पास खुद कुछ भी नहीं था, लेकिन उसने जो भी पैसा पाया था, उसे वापस कर दिया। किसी ने यह देखा।

किसी ने इसके बारे में पढ़ा या इसे टेलीविजन पर देखा और फैसला किया कि वे इस आदमी के लिए पैसे जुटाएंगे क्योंकि उसने बहुत बढ़िया मानवीय काम किया है। पिछली गिनती में, उन्होंने अमेरिकी जनता से उसके लिए \$200,000 जुटाए। अमेरिकी जनता एक अद्भुत लोग हैं जो अपने दिल से देते हैं।

इसकी शुरुआत चर्च से हुई, लेकिन अब यह अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में भी आ गया है और लोग बहुत उदार हैं। कुछ लोग धार्मिक कारणों से बहुत उदार हैं, जाहिर है, लेकिन बहुत से लोग उदार हैं। वे धार्मिक लोग नहीं हैं, लेकिन यह अमेरिकी सार्वजनिक जीवन का हिस्सा बन गया है।

तो, मानवीय आवेग। पहली महान जागृति के परिणामस्वरूप सभा के नए रूप सामने आए। सभा के नए रूप।

अब, सभा के इन नए रूपों ने अलग-अलग रूप ले लिए। सभा के इस नए रूप के अलग-अलग पहलू थे, लेकिन सभा के इस नए रूप का मतलब था कि लोग सार्वजनिक स्थानों पर खुद को इकट्ठा कर सकते थे। अब, वे ऐसा नहीं कर रहे हैं। वे खुद को सार्वजनिक स्थानों पर इकट्ठा नहीं कर रहे हैं, लेकिन पहली महान जागृति के साथ, उन्होंने ऐसा करना सीखा, खासकर जॉर्ज

व्हाइटफील्ड के साथ, क्योंकि व्हाइटफील्ड ने कहां प्रचार किया? उन्होंने बोस्टन कॉमन पर प्रचार किया, और उन्होंने पार्कों में प्रचार किया, और उन्होंने शहर के चौकों पर प्रचार किया।

तो, आपको सार्वजनिक रूप से इकट्ठा होने का यह नया विचार मिलता है, धार्मिक कारण से सुसमाचार सुनने के लिए नहीं, बल्कि सभा का यह नया रूप। सभा का यह नया रूप भी पूरी तरह से स्वैच्छिक था। किसी को भी आने की ज़रूरत नहीं थी।

कोई भी आपको चर्च जाने के लिए मजबूर नहीं कर रहा था, या कोई भी आपको जॉर्ज व्हाइटफील्ड का उपदेश सुनने के लिए मजबूर नहीं कर रहा था, या कोई भी आपको मजबूर नहीं कर रहा था, आप जानते हैं, जब तक आप जॉर्ज व्हाइटफील्ड का उपदेश सुनने नहीं जाते, तब तक आप मैसाचुसेट्स में वोट नहीं दे सकते। कोई भी ऐसा नहीं कह रहा है। तो, यह एक स्वैच्छिक प्रकार की सभा है।

और फिर इन नए प्रकार की सभाओं के साथ जो हुआ, ओह, मैं यह भी कहना चाहता था कि इस नए प्रकार की सभा के साथ नया अधिकार है क्योंकि इस नए प्रकार की सभा में नेता के पास एक ऐसा अधिकार है जो राज्य द्वारा नहीं दिया गया है। यह उसे राजा या मजिस्ट्रेट या राजकुमार या किसी और की तरह राज्य द्वारा नहीं दिया गया था। इस नए प्रकार की सभा में यह नया अधिकार एक मान्यता थी कि यह व्यक्ति ईश्वर का है और यह व्यक्ति ईश्वर के वचन का प्रचार कर रहा है।

तो, यह मान्यता है कि अधिकार हस्तांतरित नहीं होता बल्कि अधिकार दूसरे से आता है, एक ईश्वरीय स्रोत से। तो इस नए प्रकार की सभा के साथ, लोग एक साथ आ रहे हैं, एक साथ आने के लिए मजबूर नहीं हो रहे हैं, एक साथ आने के लिए मजबूर नहीं हो रहे हैं, इस नेतृत्व को सुन रहे हैं, इस अद्भुत प्रकार के करिश्माई नेतृत्व, इससे क्या होता है, सभा के ये नए रूप जो धार्मिक रूप से शुरू हुए, वे किसमें स्थानांतरित होते हैं? राजनीतिक क्षेत्र में। और इसलिए लोग यह महसूस करना शुरू करते हैं कि हम इसे राजनीतिक रूप से भी कर सकते हैं।

हम स्वेच्छा से सार्वजनिक रूप से इकट्ठा हो सकते हैं। कोई हमें ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर रहा है। हम सार्वजनिक रूप से इकट्ठा हो सकते हैं।

हम स्वेच्छा से इकट्ठा हो सकते हैं। हम नेताओं को सुन सकते हैं, सिर्फ यह नहीं कि उन्हें नेता कहा जाता है, बल्कि हम नेताओं को सुन भी सकते हैं। हम उन नेताओं में अधिकार देखते हैं।

उनके पास भले ही कोई सार्वजनिक पद न हो, लेकिन वे जो कहते हैं उसमें उनका अधिकार होता है। और यह आसानी से राजनीतिक और सामाजिक रूप से स्थानांतरित हो सकता है, जो हुआ भी। इसलिए विधानसभा के नए रूप वाकई अविश्वसनीय हैं।

अगला है लोगों की संप्रभुता। आलोचनात्मक, मुझे कहना चाहिए था कि सार्वजनिक कार्यालय की आलोचनात्मक। तो, लोगों की संप्रभुता, जो एक तरह से मुक्त हुई, लोगों की स्वतंत्रता, इस पूरे प्रथम महान जागृति में मुक्त हुई।

लेकिन लोगों की संप्रभुता महत्वपूर्ण है; मुझे कहना चाहिए था कि सार्वजनिक कार्यालय की आलोचना। इसलिए अब, लोगों को लगता है कि विधानसभा के इन नए रूपों में, वे सार्वजनिक कार्यालय की आलोचना करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हैं। वे हमारे मामले में इंग्लैंड और राजा की आलोचना करने के लिए स्वतंत्र महसूस करते हैं।

इसलिए, वे काफी स्वतंत्र महसूस करते हैं। अब, जो चीज उन्हें यह स्वतंत्रता देती है, वह है इस तरह की सार्वजनिक सभा में संख्या का विशुद्ध भार। इसलिए, संख्या का विशुद्ध भार उन्हें ऐसा करने की स्वतंत्रता देता है।

और बोस्टन, आप बोस्टन की सड़कों पर चलते हैं, आप फ्रीडम ट्रेल पर चलते हैं, और आप उसमें से कुछ देखते हैं। अब, इस सबका सार क्या है? तो यहाँ वह उद्धारण है जो मैं चाहता हूँ कि आप समझ लें, लेकिन मैं इन पावरपॉइंट्स को ब्लैकबोर्ड पर डालना याद रखने की कोशिश करूँगा, वैसे, अगर आप सब कुछ नहीं समझ पाते हैं, तो कोई बात नहीं। लेकिन मुझे यह उद्धारण बहुत पसंद है।

एक सामाजिक घटना के रूप में देखा जाए तो महान जागृति अमेरिकी क्रांति के पहले चरण से कम कुछ नहीं दर्शाती है। एक सामाजिक घटना के रूप में देखा जाए तो महान जागृति अमेरिकी क्रांति के पहले चरण से कम कुछ नहीं दर्शाती है। तो, आपको खुद से पूछना होगा कि अगर पहली महान जागृति नहीं होती तो क्या अमेरिकी क्रांति होती? मुझे लगता है कि इसका जवाब शायद नहीं है।

मुझे लगता है कि प्रथम महान जागृति और प्रथम महान जागृति के धार्मिक और सामाजिक दोनों तरह के प्रवाह के संदर्भ में हमने जो कुछ भी बात की है, मुझे लगता है कि इसका उत्तर नहीं है, क्योंकि मुझे लगता है कि प्रथम महान जागृति में जो हुआ, विशेष रूप से यहाँ सामाजिक रूप से, इसने एक राजनीतिक क्रांति के लिए आधारशिला, नींव रखी। फिर, लोगों ने इसे उठाया, और वे राजनीतिक क्रांति के साथ आगे बढ़ गए। इसलिए, यह बहुत दिलचस्प है कि अमेरिका में धार्मिक जीवन और अमेरिकी क्रांति के साथ आई क्रांति के बीच एक संबंध है।

तो, ठीक है। हाँ, आशा है। क्या महान जागृति अमेरिका के सभी भागों तक पहुँची? हाँ, महान जागृति पहुँची।

अब, कुछ जगहें ऐसी थीं जो अभी भी एक तरह से टेनेसी और केंटकी में बसी हुई थीं, लेकिन यह मेन से जॉर्जिया तक, सभी मध्य उपनिवेशों तक पहुँच गई थी। हर कोई महान जागृति, पहली महान जागृति से प्रभावित था। और साथ ही, यह कोई सीमांत जागृति नहीं थी।

यह एक शहरी जागृति थी। इसलिए यह बोस्टन, फिलाडेल्फिया और न्यूयॉर्क जैसी जगहों पर जीवंत हो गई। तो हाँ, यह बहुत शक्तिशाली है।

ठीक है, प्रथम महान जागृति के बारे में कुछ और। हम प्रथम महान जागृति के बारे में क्या जानना चाहते हैं? प्रथम महान जागृति में होने वाले सभी अद्भुत लोग और सभी अद्भुत घटनाएँ, यहाँ

कुछ भी? क्या मुझे आपको पाँच सेकंड देने चाहिए? मुझे देने चाहिए। यहाँ प्रथम महान जागृति के लिए पाँच सेकंड का ब्रेक है।

मेरा मतलब है, वेस्लेयन पुनरुद्धार से पहले। मुझे कहना चाहिए। बस यहाँ एक छोटा सा ब्रेक ले लो।

आप इसे शुक्रवार, सोमवार और बुधवार को कर सकते हैं। तब आप कोर्स के आधे रास्ते पर होंगे, सेमेस्टर के आधे रास्ते पर। ओह, ठीक है।

स्ट्रेच करें, आराम करें। रूथ ही एकमात्र ऐसी लड़की है जिसकी इससे पहले क्लास है, है न? रूथ को छोड़कर आपमें से किसी की भी इससे पहले क्लास नहीं है। तो, यह बिस्तर से उठकर इस क्लास में जाने जैसा है।

बढ़िया, ठीक है। ठीक है, हम यहाँ यात्रा पर जा रहे हैं। और एक और बात हो रही है।

और यह इंग्लैंड में हो रहा है, और इसे वेस्लेयन रिवाइवल कहा जाता है। ठीक है, तो मैं डी, इंग्लैंड और वेस्लेयन रिवाइवल पर हूँ। तो यह धर्मनिष्ठा के साथ हो रहा है।

आप जानते हैं, यह जर्मनी में प्रथम महान जागृति के साथ हो रहा है, और यह अमेरिका में भी हो रहा है। और अब, इंग्लैंड में, आपके पास वेस्लेयन पुनरुद्धार है। ठीक है, अब मुझे यहाँ सावधान रहने की ज़रूरत है क्योंकि अगर आप मेरे कार्यालय में आते हैं, तो पहली चीज़ जो आप देखते हैं वह जॉन वेस्ले की एक प्रतिमा है।

तो किसी दिन मुझसे मिलने आइये। मैं आपको जॉन वेस्ले की एक प्रतिमा दिखाऊंगा। मैं आपको अपने कार्यालय में जॉन वेस्ले की कुछ तस्वीरें भी दिखाऊंगा।

इसलिए, मुझे यहाँ सावधान रहना होगा। मैं इस पर बहुत समय लगा सकता हूँ, शायद पूरा एक सेमेस्टर। इसलिए, मैं ऐसा न करने की कोशिश करूँगा।

मैं इन सब बातों को परिप्रेक्ष्य में रखने की कोशिश करूँगा और, आप जानते हैं, और इस तरह से निपटने की कोशिश करूँगा, आप जानते हैं, अच्छा संतुलन और सब कुछ। लेकिन वह वेस्लेयन पुनरुद्धार बहुत महत्वपूर्ण है, और उस वेस्लेयन पुनरुद्धार को अनदेखा करना आसान है। लेकिन इस कोर्स के लिए, हम सुधार से वर्तमान की ओर जा रहे हैं।

आप वेस्लेयन पुनरुद्धार को नजरअंदाज नहीं कर सकते। ठीक है, तो हम जो करने जा रहे हैं वह एक परिचय है, और फिर हम जॉन वेस्ले का एक जीवनी संबंधी रेखाचित्र और जॉन वेस्ले का कुछ धर्मशास्त्र देने जा रहे हैं जिसे आप देखेंगे, जो समान और भिन्न दोनों हैं। प्रथम महान जागृति के धर्मशास्त्र से समान और भिन्न।

तो, यह एक तरह से प्रथम महान जागृति में जो हम देखते हैं उसका संतुलन है। तो, ठीक है। ठीक है, सबसे पहले, परिचय।

जॉन वेस्ले का परिचय देने के लिए, मुझे उस तस्वीर को छोड़ना होगा, मुझे जैकब आर्मिनियस नाम के एक व्यक्ति के पास आना होगा। तो, जैकब आर्मिनियस है। ठीक है, जैकब आर्मिनियस, जैकब आर्मिनियस के बारे में लंबी कहानी, जैकब आर्मिनियस एक डचमैन था। वह नीदरलैंड में था, और जैकब आर्मिनियस को, अपने समय के डच कैल्विनिस्टों द्वारा कैल्विनवाद का बचाव करने के लिए कहा गया था।

तो, वह एक धर्मशास्त्री था, और उसे कैल्विनवाद का बचाव करने के लिए कहा गया था। और जब आर्मिनियस को ऐसा करने के लिए कहा गया, तो मेरा मतलब है, उसने इसे स्वेच्छा से स्वीकार कर लिया, और जब उसे ऐसा करने के लिए कहा गया, तो उसने पाया कि कुछ जगहें ऐसी थीं जहाँ वह कैल्विनवाद से असहमत था। कुछ जगहें ऐसी थीं जहाँ उसे नहीं लगा कि जॉन कैल्विन या उसके अनुयायी सही थे।

और इसलिए, उन्होंने उन चीजों पर चर्चा शुरू की। दरअसल, उन्होंने रिमोनस्ट्रेंस नामक कुछ लिखा था; मुझे इसे अंतिम में रखना चाहिए था, लेकिन उन्होंने और उनके अनुयायियों ने एक ऐसी चीज विकसित की जिसे उन्होंने रिमोनस्ट्रेंस कहा; यह पहला शब्द नहीं है; यह दूसरा शब्द है, रिमोनस्ट्रेंस। उन्होंने एक रिमोनस्ट्रेंस विकसित किया, जो कैल्विनवाद के खिलाफ एक विस्तृत तर्क था।

मुझे यह नहीं कहना चाहिए कि यह कैल्विनवाद के खिलाफ एक विस्तृत तर्क नहीं है; यह कैल्विनवाद के बारे में एक विस्तृत तर्क है। क्योंकि कैल्विनवाद में कुछ ऐसी चीजें थीं जो उन्हें पसंद थीं और उन्होंने उन पर अपना कब्जा जमाया हुआ था। इसलिए ये डच लोग कैल्विनवाद के विरोधी नहीं हैं।

ठीक है, जो हुआ वह यह था कि उन्होंने एक तरह का समूह बनाया, और समूह को रिमोनस्ट्रेंस कहा गया, पहला शब्द, रिमोनस्ट्रेंट्स, रिमोनस्ट्रेंस। तो, रिमोनस्ट्रेंस ने रिमोनस्ट्रेंस का गठन किया। ठीक है, क्या आप इससे सहमत हैं? और रिमोनस्ट्रेंस कैल्विनवाद के बारे में एक तर्क था।

तो चलिए मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ, क्योंकि अगर आप इन उदाहरणों को नहीं समझते हैं, तो आप हमारी कही गई हर बात को नहीं समझ पाएँगे। तो चलिए मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ। एक उदाहरण यह था, और हम यहाँ सिर्फ आर्मिनियस पर ही बात करेंगे, लेकिन एक उदाहरण यह था कि आर्मिनियस कैल्विन के दोहरे चुनाव के सिद्धांत से असहमत थे।

इसलिए, वह जॉन कैल्विन को पढ़ता है; उसे कैल्विन का बचाव करना चाहिए, लेकिन वह कहता है, मैं दोहरे चुनाव के मुद्दे पर कैल्विन का बचाव नहीं कर सकता। मैं पूर्वनियति में विश्वास करता हूँ, आर्मिनियस ने कहा। मैं पूर्वनियति में विश्वास करता हूँ, लेकिन मैं पूर्वनियति को ईश्वर के पूर्वज्ञान से जोड़ता हूँ। इसलिए, ईश्वर उन लोगों को पहले से जानता है जो बचाए जाने वाले हैं, और वह उन लोगों को भी पहले से जानता है जो बचाए जाने वाले हैं, आप जानते हैं, आप बचाए जाने वाले हैं।

इसलिए, परमेश्वर के परिवार में आने के लिए अनुग्रह के साधनों का उपयोग करें। वह इसे पहले से जानता है। इसलिए यदि आप इसे पूर्वनियति कहना चाहते हैं, तो आर्मिनियस ने कहा, यह ठीक है।

मुझे ऐसा करने में खुशी है, लेकिन मैं इसे उस तरह नहीं मानता जैसा कैल्विन ने सिखाया था। तो यह एक उदाहरण है। दूसरा उदाहरण यह है कि कैल्विन ने सिखाया कि मसीह चुने हुए लोगों के लिए मरा, जबकि आर्मिनियस ने कहा, नहीं, मसीह सभी के लिए मरा।

मसीह उन सभी के लिए मरा जो कोई भी हो। अब, ऐसा होता है कि केवल वे ही लोग हैं जो मसीह की मृत्यु को स्वीकार करते हैं, जो उसकी मृत्यु से लाभान्वित होंगे, लेकिन मसीह सभी के लिए मरा। मसीह की मृत्यु उन सभी के लिए थी जो कोई भी हो।

इसलिए, उन्होंने इस पर थोड़ा असहमति जताई और इसे समझाने की कोशिश की। तीसरी बात जो आर्मिनियस ने कही, आर्मिनियस ने कहा, मैं कैल्विन के साथ एक हूँ। मुझे लगता है, मैं कैल्विन की कही गई बात से बहुत खुश हूँ, कि हम खुद को बचाने के लिए कुछ नहीं कर सकते।

हममें कोई अच्छाई नहीं है जिससे हम खुद को बचा सकें। याद रखें, रोमन कैथोलिक फ़कीर इक़बाल ने यह नहीं कहा था कि हाँ, जो तुम कर सकते हो करो, मानो इंसानों में कुछ अच्छाई है जिससे वे भगवान के पास आ सकते हैं। खैर, आर्मिनियस कैल्विन से सहमत थे।

हममें कोई अच्छाई नहीं है जिसके कारण हम परमेश्वर के पास आ सकें। यह सब परमेश्वर की कृपा से है। उद्धार का यह पूरा काम परमेश्वर की कृपा से है।

तो यहाँ वे कैल्विन से सहमत थे। उन्होंने कहा कि मैं इस मामले में कैल्विन से सहमत हूँ, इसलिए यह अच्छी बात है। चौथी बात जिस पर उन्होंने यहाँ चर्चा की वह यह है कि कैल्विन का मानना था कि ईश्वर की कृपा अप्रतिरोध्य है।

आप ईश्वर की कृपा का विरोध नहीं कर सकते। आर्मिनियस ने कहा, नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता क्योंकि लोगों में स्वतंत्र इच्छा का अवशेष होता है। इसलिए लोग ईश्वर की कृपा का विरोध कर सकते हैं।

वे ईश्वर की कृपा को अस्वीकार कर सकते हैं। तो यह एक संभावना है। आर्मिनियस का मानना था कि यह कोई संभावना नहीं है, लेकिन यह एक संभावना है कि वे ईश्वर की कृपा को नकार सकते हैं।

और फिर, पाँचवाँ, जब दृढ़ता के सिद्धांत की बात आती है, तो परमेश्वर हमें थामे रखने में दृढ़ रहता है। याद है हमने जॉन कैल्विन के साथ दृढ़ता के बारे में बात की थी? कैल्विन के साथ दृढ़ता का मतलब है कि हम परमेश्वर तक नहीं पहुँच रहे हैं और बस अपनी उँगलियों से परमेश्वर को थामे हुए हैं। कैल्विन की दृढ़ता की समझ यह है कि यह परमेश्वर की दृढ़ता है जो हमें थामे रखती है।

यह ईश्वर है जो हमें अपनी बाहों में लेकर हमें थामे हुए है। खैर, जब दृढ़ता के सिद्धांत की बात आई, तो आर्मिनियस इस बारे में निश्चित नहीं था, लेकिन उसका मानना था कि एक बार मोक्ष प्राप्त करने के बाद उसे खोना संभव है। इसलिए, ऐसे कई स्थान थे जहाँ आर्मिनियस कैल्विन से असहमत थे, कैल्विन से असहमत थे, उनके अनुयायियों, रेमोनस्ट्रेंट्स ने वास्तव में इस धर्मशास्त्र को विकसित किया।

अब, हम परिचय के तौर पर इसका उल्लेख इसलिए कर रहे हैं क्योंकि यह वह धर्मशास्त्र है जिसमें जॉन वेस्ले को प्रशिक्षित किया गया होगा। वह इस धर्मशास्त्र को समझ सकता था। वह निश्चित रूप से कैल्विन को समझ सकता था, क्योंकि उसने कैल्विन को पढ़ा था, लेकिन वह आर्मिनियाई धर्मशास्त्र को भी समझ सकता था क्योंकि 18वीं शताब्दी तक आते-आते आर्मिनियाई धर्मशास्त्र ब्रिटिश जीवन का हिस्सा बन चुका था।

तो, जॉन वेस्ली इस बात से बहुत परिचित रहे होंगे। सवाल यह है कि क्या जॉन वेस्ली पूरी तरह से आर्मिनियन थे? खैर, मुझे इस बारे में पक्का पता नहीं है। मैं वेस्ली के धर्मशास्त्र के बारे में वेस्लीयन धर्मशास्त्र के रूप में बात करना पसंद करता हूँ, न कि वेस्लीयन आर्मिनियन धर्मशास्त्र के रूप में, इसलिए मुझे इस बारे में पक्का पता नहीं है।

लेकिन हम वेस्लेयन धर्मशास्त्र के बारे में बात करने जा रहे हैं, लेकिन वह निश्चित रूप से आर्मिनियस को जानता था, और निश्चित रूप से ऐसे स्थान थे जहाँ वह आर्मिनियस से सहमत था। इसलिए, मैं यह परिचय इसलिए दे रहा हूँ ताकि हम जान सकें कि हम यहाँ इस सब के साथ कहाँ से शुरू कर रहे हैं। तो, क्या आपके पास आर्मिनियस के बारे में कोई प्रश्न है? तो यह इस कोर्स के लिए एक और तरह का जानने योग्य नाम है क्योंकि वह सुधार से लेकर वर्तमान तक के कोर्स में एक प्रमुख खिलाड़ी है, इसलिए उसका इस तरह से आना महत्वपूर्ण है।

ठीक है, इस बारे में कोई सवाल है? ठीक है। हाँ, जैसी? ठीक है। वह कैल्विन को अच्छी तरह से जानता था, उसने कैल्विन को पढ़ा था, उसने कैल्विन के उत्तराधिकारियों को पढ़ा था।

वह एक बाइबिल विद्वान भी हैं, इसलिए वह इन चीजों को एक साथ रखने की कोशिश कर रहे हैं। उनकी पहली निष्ठा बाइबिल के प्रति है, इसलिए उन्हें लगता है कि वह कुछ ऐसी बातों का जवाब बाइबिल के अनुसार दे रहे हैं जिनसे वह असहमत हैं, जैसे दोहरा चुनाव। और इस पार्टी, इस समूह, रेमोनस्ट्रेंट्स का गठन करने वाले उनके अनुयायियों को भी ऐसा ही महसूस हुआ।

लेकिन कैल्विन को भी लगता है कि वह हर बात को पवित्रशास्त्र से प्रमाणित कर रहा है। कुछ और? आर्मिनियस? जैकब आर्मिनियस? यह परिचय? ठीक है। चलिए वेस्ली से शुरू करते हैं, और फिर हमें शुक्रवार को इसे उठाना होगा।

ठीक है। देखिए, नंबर दो, मैं जॉन वेस्ले का एक जीवनी संबंधी विवरण देने जा रहा हूँ। तो, मैं ऐसा कोर्स में लगभग पाँच लोगों के साथ करता हूँ।

हमने जॉन कैल्विन के साथ भी ऐसा ही किया, भले ही आपने कैल्विन पर लिखी किताब पढ़ी हो। तो, मैं जॉन वेस्ली के साथ भी ऐसा ही करता हूँ। मैं उनकी जीवनी के बारे में बात करने के लिए कुछ समय निकालता हूँ।

मुझे इसे यहाँ-वहाँ फिर से देखना होगा क्योंकि वह एक दिलचस्प व्यक्ति थे, और अगर मेरे दफ़्तर में जॉन वेस्ली की प्रतिमा है, तो इसका कुछ मतलब ज़रूर होगा। इसलिए मुझे यहाँ सावधान रहना होगा। लेकिन मैं वेस्ली की जीवनी के बारे में थोड़ा-बहुत बताना चाहता हूँ।

ठीक है। मेरे पास आपके लिए उनकी तारीखें हैं। जॉन वेस्ले की तारीखें हैं।

तो, मैं यहाँ कुछ मुख्य बातें बताना चाहूँगा। जॉन वेस्ले, 1703 से 1791 तक। ठीक है।

उनके पिता का नाम सैमुएल था। उनकी माँ का नाम सुज़ाना था। सुज़ाना वेस्ली।

और वह वहाँ है। सुज़ाना वेस्ले की तारीखें हैं। सैमुअल वेस्ले एक एंग्लिकन पादरी थे।

उनके पास दो चर्च थे। मैंने यह पावरपॉइंट बहुत अच्छी तरह से नहीं बनाया, लेकिन मुझे पता है कि आप एक मिनट के लिए मेरा साथ देंगे, है न? ठीक है। ये सैमुअल वेस्ली के दो चर्च हैं, दो एंग्लिकन चर्च।

इनमें सबसे महत्वपूर्ण एपवर्थ था, जिसका एक पड़ोसी चर्च भी था जिसका नाम रूट था। इसका उच्चारण रूट, WROOTE है। तो यहाँ उनके पिता हैं, जो एक एंग्लिकन पादरी हैं, जिनके पास ये दो पैरिश हैं।

जॉन वेस्ली ने अंततः अपने पिता के पदचिन्हों का अनुसरण किया और एंग्लिकन पादरी के रूप में नियुक्त हुए। इसलिए वे स्थान महत्वपूर्ण हैं। आइए यहाँ नामों पर वापस जाएँ।

उनकी माँ, सुज़ाना। अब, सुज़ाना धार्मिक इतिहास की महान महिलाओं में से एक थीं। मुझे लगता है कि हमने पेपर के लिए जो विकल्प दिए थे, उनमें से एक ईसाई इतिहास में महिलाएँ या ऐसा ही कुछ था।

मुझे इस पर जांच करनी होगी। लेकिन सुज़ाना निश्चित रूप से ईसाई इतिहास की महान महिलाओं में से एक थी। उसने 19 बच्चों को जन्म दिया।

यह बहुत है। यह बहुत सारे बच्चे हैं। उसने 19 बच्चों को जन्म दिया।

उनमें से दस बच्चे बचपन से ही वयस्क हो गए, और हम उनमें से कुछ का ज़िक्र करेंगे। लेकिन जब भी मैं सुज़ाना के 19 बच्चों को जन्म देने की बात करता हूँ, तो वह 25 बच्चों में से एक थी। उसकी माँ ने 25 बच्चों को जन्म दिया।

क्या आप इसकी कल्पना भी कर सकते हैं? मेरा मतलब है, उसने 25 बच्चों को जन्म दिया। तो, सुज़ाना उन 25 में से एक थी। तो उसने केवल 19 बच्चों को जन्म दिया।

इसलिए, वह अपनी माँ की तरह रिकॉर्ड नहीं बना पाई, लेकिन यह काफी उल्लेखनीय था। लेकिन 19 बच्चों को जन्म देने से ज़्यादा, सुज़ाना धार्मिक इतिहास में अपने बच्चों की बाइबिल और धर्मशास्त्रीय शिक्षा के रूप में जानी जाती हैं। वह अपने बच्चों को पढ़ाने और बाइबिल और धर्मशास्त्रीय ज्ञान के साथ अपने बच्चों का पालन-पोषण करने में बहुत अनुशासित थी।

यह बात, ज़ाहिर है, जॉन के मामले में विशेष रूप से सच थी। और इसलिए, सुज़ाना इस कहानी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जॉन के आध्यात्मिक विकास पर उसका प्रभाव था, लेकिन साथ ही साथ उसके शैक्षणिक विकास पर भी। इसलिए, सुज़ाना सक्षम थी... वह एक बेहतरीन शिक्षिका और बहुत ज्ञानी थी।

मैं उसे न केवल बाइबल और धर्मशास्त्र बल्कि गणित, सामाजिक इतिहास, इतिहास और इसी तरह के अन्य विषयों में भी पढ़ाने में सक्षम था। तो वास्तव में वह एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति था। जब मैं सुज़ाना के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे एक और व्यक्ति की याद आती है जिसे हमने पहले ही पाठ्यक्रम में पढ़ाया था, और उसका नाम एन हचिंसन था।

क्या आपको एन हचिंसन याद है? एन हचिंसन वह महिला थीं जो बोस्टन में पढ़ाती थीं और अपने घर में धर्मशास्त्र पढ़ाती थीं और अपने घर में धर्मशास्त्र पर चर्चा करती थीं, और प्यूरिटन्स ने उन्हें बाहर निकाल दिया। वह अंततः रोड आइलैंड में चली गईं। लेकिन ये महिलाएँ बहुत उल्लेखनीय थीं, और उनके पास यहाँ कुछ वास्तविक धर्मशास्त्रीय अंतर्दृष्टि थी।

ठीक है, तो यह उसके जीवन की शुरुआत है। वह वास्तव में एपवर्थ रेक्टरी में पैदा हुआ था। वैसे, मुझे सावधान रहना होगा, मुझे पता है, लेकिन मैं सावधान रहूँगा। लेकिन एपवर्थ रेक्टरी तब जल गई जब जॉन सिर्फ़ एक छोटा लड़का था।

वह घर में ही था जब घर जल गया, और उसके पिता उसे बचाने में सफल रहे। इसलिए, उसके पिता और कुछ अन्य लोग भागकर अंदर गए और जॉन को बाहर निकाला और एपवर्थ रेक्टरी में और एपवर्थ रेक्टरी से जॉन की जान बचाई। और तब से, जब वह अपने वयस्क जीवन में आया, जॉन वेस्ले ने खुद को आग से निकाला हुआ एक ब्रांड कहा।

तो, यह एक अच्छा बाइबिल संदर्भ है। तो, जॉन का जन्म एपवर्थ में हुआ था और वह लगभग एपवर्थ में ही मर गया था, लेकिन उसे बचा लिया गया। तो मेरे एक दोस्त, इसका किसी और चीज़ से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन मुझे अपना समय देखना होगा।

ठीक है। लेकिन मैं और मेरा एक दोस्त 2015 में इंग्लैंड में वेस्लेयन स्थलों का दौरा करने जा रहे हैं। हम जिन स्थानों पर जाएंगे उनमें से एक एपवर्थ रेक्टरी है क्योंकि एपवर्थ रेक्टरी का पुनर्निर्माण किया गया था और अब यह इंग्लैंड में एक ऐतिहासिक स्थल है।

तो, हम उस एपवर्थ रेक्टरी में जा रहे हैं। हम उसमें माचिस नहीं जलाएँगे। हम आग लगने के पूरे दृश्य को फिर से नहीं बनाने जा रहे हैं, लेकिन हम उस एपवर्थ रेक्टरी में जाएँगे।

तो, मैं वहाँ जाने के लिए इंतजार नहीं कर सकता। तो, ठीक है। तो यह उसका जन्म है, यह उसकी शुरुआत है, और इसी तरह, 1703।

तो, ठीक है। अब, क्या होता है? उनकी जीवनी के संदर्भ में एक और बात यह है कि 1720 उनके जीवन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण तारीख बन गई। 1720।

ओह, मैंने यहाँ सैमुअल वेस्ली का नाम भी नहीं लिखा। मैं सैमुअल वेस्ली का नाम लिखूँगा, उनके पिता का। 1720 उनके जीवन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण तारीख बन गई।

और कृपया ध्यान दें कि वह केवल 17 वर्ष का है, इसलिए वह बहुत बूढ़ा नहीं है। 1720 में, जॉन वेस्ले ने ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। इसलिए, वह ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में एक छात्र बन गया, और आप जानते हैं, वहाँ कई कॉलेज हैं।

वह क्राइस्ट चर्च नामक कॉलेज में गया। इसलिए, ऑक्सफ़ोर्ड में यही उसकी शिक्षा का स्थान था, जहाँ उसने अपनी स्नातक की पढ़ाई शुरू की। अब, संक्षेप में, उसने सोचा, जॉन वेस्ली ने सोचा कि भगवान ने उसे मंत्रालय के लिए बुलाया है।

इसलिए, वह क्राइस्ट चर्च जाता है। उसे ईसाई मंत्रालय के लिए नियुक्त किया जाता है, पहले एक डीकन के रूप में। और जॉन वेस्ले को लगता है कि वह अपना बाकी जीवन एक एंग्लिकन पादरी के रूप में बिताने जा रहा है, लेकिन वह पढ़ाने जा रहा है।

तो, संक्षेप में, उन्हें लिंकन कॉलेज में पढ़ाने का अवसर मिला, जो ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी का ही एक और कॉलेज है। और एक बार जब वे बस गए, एक बार जब उन्होंने लिंकन कॉलेज में पढ़ाना शुरू किया, तो वे बस गए और उन्होंने खुद से कहा, यही वह जगह है जहाँ मैं अपना बाकी जीवन बिताने जा रहा हूँ। मैं लिंकन कॉलेज में ग्रीक पढ़ाने जा रहा हूँ।

मैं खुश हूँ। लेकिन कहानी को छोटा करते हुए, जाने से पहले, बस ध्यान दें, वह लिंकन कॉलेज में ज़्यादा समय तक नहीं रहा था, उसके पिता सैमुअल बीमार पड़ गए। जॉन को अपनी पढ़ाई छोड़कर वापस एपवर्थ जाना पड़ा।

और उन्हें अपने पिता के लिए मंत्रालय संभालना पड़ा क्योंकि उनके पिता बहुत बीमार थे। तो यह उनके जीवन में एक तरह की रुकावट थी। इसमें कोई संदेह नहीं है।

उनका ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन अपने पिता की मदद करने के लिए उन्हें ऐसा करना ज़रूरी लगा। और उन्होंने वास्तव में कुछ सालों के लिए कॉलेज छोड़ दिया। उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया।

अब, जो हुआ वो ये कि कॉलेज में भी कुछ लोग हैं, और वो भी क्राइस्ट चर्च में पढ़ रहे हैं। और उनमें से एक उसका भाई चार्ल्स था। तो, चार्ल्स वेस्ले, उसका छोटा भाई, जैसा कि आप देख सकते हैं, उनके बीच चार साल का उम्र का अंतर है।

में थे, तब ज़्यादातर समय वे ऑक्सफ़ोर्ड में ही पढ़ते थे। जॉन के दूर रहने के दौरान ऑक्सफ़ोर्ड में चार्ल्स वेस्ले और अन्य लोगों के साथ कुछ बहुत ही दिलचस्प हुआ।

और यहीं से हम शुक्रवार को कहानी शुरू करेंगे। ठीक है। खैर, वह रास्ते में एपवर्थ में था, अपने पिता की उस मंत्रालय में मदद कर रहा था।

ऑक्सफ़ोर्ड में चार्ल्स, कुछ बहुत ही दिलचस्प हो रहा है। तो हम देखेंगे कि शुक्रवार को वापस आकर क्या हो रहा है। तो आपका दिन शुभ हो। मैं शुक्रवार को आपसे मिलूँगा।

यह डॉ. रोजर ग्रीन हैं, जो अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफ़ॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 13 है, द ग्रेट अवेकनिंग।